IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, June 2020
Impact Factor: 4.819

सैद्धान्तिक समीक्षा और आ. रामचन्द्र शुक्ल - 3

डॉ अजय कुमार बिन्द
असि. प्रो. हिंदी
राजकीय महाविद्यालय नानौता, सहारनपुर
drajaybind@gmail.com

आ.शुक्ल के अनुसार साहित्य केवल मनोरंजन मात्र ही नहीं है। वे कहते हैं– "वास्तव में कला की दृष्टि दोनों प्रकार (करुणा, प्रेमभाव अर्थात् प्रयत्न पक्ष या आनंद की साधनावस्था तथा आनन्द का उपभोग पक्ष) का काव्यों में अपेक्षित है। वे मानते हैं कि काव्य का उद्देश्य पाठक या श्रोता को संकीर्णता से मुक्त कर लोक सामान्य भावभूमि पर ले आना है। साधनावस्था या प्रयत्न पक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों में भी चूक हुई तो लोक गति को परिचालित करने वाली स्थायी प्रभाव न उत्पन्न हो सकेगा। यहीं तक नहीं, व्यंजित भावों के साथ पाठकों के सहानभूति या साधारीकरण तक जो रस की पूर्ण अनुभूति के लिए आवश्यक है, ना हो सकेगा।"24 करुणा सामाजिकता का मूल आधार है। राम द्वारा रावण के वध में यही भाव प्रमुख है। रावण यहाँ आततायी है। प्रबन्ध काव्य में आ.शुक्ल के आग्रह का कारण भी यही करुणा है। आ.शुक्ल का मत था कि भारतीय परम्परा सदैव से भगवान् को लोक के बीच प्रतिष्ठित करती रही हृदय के कोने में नहीं। राम के रावण के वध के सदृश क्रोध में लोकोत्तर सौन्दर्य का यही कारण है। प्रकार क्रोधादि प्रचण्ड भावों की व्यंजना में भी जहाँ करुणा विद्यमान है, तो उनमें भी पूर्ण सौन्दर्य परिलक्षित होता है। आ.शुक्ल का यह लोकधर्म ही है। इस लोक धर्म के अन्तर्गत समस्त लोक मर्यादाओं और लोक व्यवहारों की प्रतिष्ठा है। आ.शुक्ल ने कविता को परिभाषित करते हुए कहा कि– "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।25 इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्म योग और ज्ञान योग का समकक्ष मानते हैं।" इसका तात्पर्य यह है कि आ.शुक्ल काव्य को वैयक्तिक भूमि से उठाकर एक उच्च सामाजिक अथवा लोक-व्याप्त भूमि पर प्रतिष्ठित करते हैं।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT